कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे...

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.co

हिन्दी साहित्य और हिंदी फिल्म जगत में यदि किसी कवि ने एक समान प्रतिष्ठा अर्जित की है, तो वो हैं कवि 'गोपालदास सक्सेना ', जिन्हें हम 'नीरज' के नाम से जानते हैं, वे ऐसे रचनाकार थे जिन्होंने मंचीय कविता की गरिमा को तो बढ़ाया ही साथ ही उन्होंने हिंदी फिल्मी गीतों को भी साहित्यिक उत्कृष्टता प्रदान की. वे अपनी सरल, रोमानी और दार्शनिक रचनाओं के लिए जाने जाते हैं, नीरज केवल कवि नहीं थे, वे शब्दों के जादूगर और भावनाओं के शिल्पी थे. वे कवि सम्मेलनों के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे. उनकी वाणी में ऐसी मधुरता और ओज था कि श्रोता मंत्रमुग्ध हो जाते थे. साहित्य की दुनिया में भरपूर ख्याति प्राप्त करने के बाद नीरज जी ने फिल्मों के लिए कई यादगार गीत लिखे, उनकी चर्चित फिल्मों में 'नई उमर की नयी फसल', 'कन्यादान', 'तेरे मेरे सपने', 'गैम्बलर', 'प्रेम पुजारी', 'मेरा नाम जोकर', 'चंदा और बिजली', 'चा चा चा', 'छुपा रूस्तम', 'शर्मीली', 'पहचान' आदि हैं.

उनकी फिल्मों में आने की कहानी भी दिलचस्प है. 9 फ़रवरी 1960 को नीरज जी एक कार्यक्रम के सिलसिले में बंबई आये थे, वहां अलीगढ में उनके छात्र रह चुके आर चंद्रा से उनकी मुलाक़ात हुई जो फ़िल्म 'बरसात की रात बना चुके थे' और 'नई उम्र की नई फसल' बना रहे थे, उन्होंने नीरज जी से इस फ़िल्म के गीत लिखने का आग्रह किया, यहीं से उनकी फिल्मी यात्रा शुरू हुई . इस फ़िल्म के नीरज जी के लिखे गीत 'कारवां गुज़र गया गुबार देखते रहे', 'देखती ही रहो आज दर्पण न तुम', 'आज की रात बड़ी शोख बड़ी नटखट है' जबरदस्त हिट हुए, इसी प्रकार उसी दौर की फ़िल्म 'चा चा चा' में उनके गीत 'पालकी बहार की' और 'सुबह न आई शाम न आई' भी खूब सराहे गए.

नीरज जी का फिल्मी सफर काफी रोचक रहा. जब लोग फिल्म इंडस्ट्री में एंट्री के लिए चक्कर लगाते थे, उस दौर में नीरज जी को देवानंद ने खुद काम करने का ऑफर दिया था. नीरज जी ने एक इंटरव्यू में बताया था कि देवानंद एक कवि सम्मेलन में चीफ गेस्ट बनकर आए थे. वहाँ उनकी कविताएं सुनने के बाद उन्होंने कहा था कि मैं एक दिन आपके साथ जरूर काम करूंगा. नीरज बताते थे ,'कुछ समय बाद मैंने देवानंद की फिल्म 'प्रेम पुजारी' के बारे में पढ़ा, इस पर मैंने उन्हें खत लिखा था और उनका जवाब आया कि आ जाओ. मैं छह दिनों की छुट्टी लेकर देवानंद के पास गया, उन्होंने एसडी बर्मन से मिलवाया, जिन्हें यकीन नहीं हो रहा था कि मैं उनके लिए गीत लिख पाऊंगा. एसडी बर्मन ने नीरज जी को एक शब्द दिया 'रंगीला' और एक धुन देकर कहा कि गाना इसी मीटर पर होना चाहिए और उसका प्रारम्भ रंगीला शब्द से होना चाहिए . ये बड़ा कठिन कार्य था, नीरज जी ने धुन सुनी और चुनौती स्वीकार करके खुद को रात को कमरे में बंद कर लिया और अगली सुबह जब निकले तो 'रंगीला रे तेरे रंग में यूँ रंगा रे मेरा मन' (प्रेम पुजारी) जैसा अमर गीत उनके हाथ में था. इस गीत को पढ़कर देवानंद झूम उठे थे इसके बाद तो देवानंद के लिए नीरज जी ने कई हिट गाने लिखे.

इसके बाद जब उनकी मुलाकात राजकपूर से हुई तब

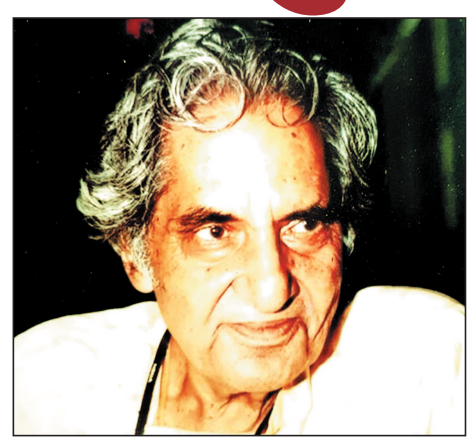

राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' फिल्म के बारे में बताया और नीरज ने इस फिल्म के लिए 'ऐ भाई जरा देख के चलो' और 'कहता है जोकर सारा ज़माना' गाने लिखे जो काफी लोकप्रिय हुए,. वो नीरज ही थे, जिन्होंने फिल्मी गीतों के इतिहास में पहली बार फिल्म 'मेरा नाम जोकर' में छंद मुक्त कविता ''ऐ भाई जरा देख के चलो...'' को गीत के तौर पर इस्तेमाल किया.

फिल्म कन्यादान के क्लासिक गीत 'लिखे जो खत तुझे' की कहानी भी खासी दिलचस्प है. वो बताते थे कि 'कन्यादान' के निर्माता को मेरा लिखा यह गीत इतना पसंद आया कि उसने अपनी कार ही मुझे दे दी. निर्माता राजेंद्र भाटिया मुझसे मिलने आए. उन्होंने कहा, मुझे आपसे गीत लिखवाना है. मैं बहुत व्यस्त था. मैंने इनकार किया तो उन्होंने तुरंत कहा- यह गाना शशि कपूर पर फिल्माया जाना है. मुझे शशि कपूर बहुत पसंद थे तो इनकार नहीं कर सका. मैंने प्लॉट सुना और महज छह मिनट में ही गीत लिखा, 'लिखे जो खत तुझे, जो तेरी याद में', इस गीत से फिल्म हिट हो गई. उस गीत से राजेंद्र इतना प्रभावित हुए कि गाने के फिल्मांकन में जो कार इस्तेमाल हुई थी,उन्होंने वह कार मुझे दे दी.

उनकी कविताऐं और गीत आम जनता की भाषा में होते थे जिनमें प्रेम, विरह,आशा, जीवन दर्शन और मानवीय संवेदनाओं का मार्मिक और सजीव चित्रण होता था, कहते हैं कि फिल्मों के उनके कई गीत जो काफी लोकप्रिय हुए हैं, वो फ़िल्मी गीत नहीं बल्कि उनकी कविताएं थीं. दरअसल 'कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे', 'पालकी बहार की' और 'लिखे जो खत तुझे' जैसे गाने नीरज की कविताओं से ही निकले थे. नीरज ने हिंदी फिल्म जगत को कई अमर, उत्कृष्ट

रचनाएं दीं. हालांकि, अंत में उनका मन फ़िल्मी दुनिया में नहीं लगा और वह वापस अलीगढ़ आ गए. नीरज जी ने हिंदी सिनेमा जगत को लगभग 10 वर्ष का समय दिया. इन 10 वर्षों में उन्होंने इंडस्ट्री को तकरीबन 200 बेहतरीन गीत दिए, उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि फिल्मी गीत भी उच्च साहित्य का रूप ले सकते हैं. उनके गीतों में काव्य सौंदर्य, जीवन का दर्शन और भावनात्मक गहराई सब कुछ था. उनके लिखे प्रसिद्ध फिल्मी गीतों में 'कारवां गुजर गया, गुबार देखते रहे' (नई उमर की नई फसल), 'पालकी बहार की', 'सुबह न आई शाम न आई' (चा चा चा), 'काल का पहिया घूमे रे भैया' (चंदा और बिजली), 'फूलों के रंग से, दिल की कलम से', 'शोखियों में घोला जाए फूलों का शराब' (प्रेम पुजारी), 'ए भाई! ज़रा देख के चलो', 'कहता है जोकर सारा ज़माना' (मेरा नाम जोकर), 'दिल आज शायर है, गम आज नगमा है' और 'चूड़ी नहीं ये मेरा दिल है' (गेम्बलर) , 'लिखे जो ख़त तुझे वो तेरी याद में' (कन्यादान), 'ओ मेरी ओ मेरी शर्मीली', 'खिलते हैं गुल यहाँ', 'आज मदहोश हुआ जाये रे', 'मेघा छायेआधी रात', 'कैसे कहें हम प्यार ने हमको क्या क्या खेल दिखाए' (शर्मीली), 'भंवरे की गुंजन है मेरा दिल', 'आप यहाँ आये किसलिए' (कल आज और कल), 'बस यही अपराध मैं हर बार करता हूं' (पहचान), 'जीवन की बगिया महकेगी, 'ये मैंने कसम ली ये तूने कसम ली', 'जैसे राधा ने माला जपी श्याम की' (तेरे मेरे सपने), 'पानी में जले मोरा गोरा बदन' (मुनीम जी) आदि यादगार गीत शामिल हैं, इसी प्रकार फ़िल्म 'उमंग' का उनका लिखा गीत 'बाबुल कौन घड़ी ये आयी' एक कम चर्चित परंतु बेहद मार्मिक यादगार विदाई गीत है.

नीरज जी को उनके साहित्यिक और फिल्मी योगदान के लिए अनेक सम्मान प्राप्त हुए– पद्मश्री (1991), पद्मभूषण (2007) के साथ साथ फ़िल्मों में सर्वश्रेष्ठ गीत लेखन के लिये उन्हें लगातार तीन साल फिल्म फेयर पुरस्कार के लिये नामांकित किया गया (1970 ,1971,1972) इनमें से उन्हें 'काल का पहिया घूमे रे भैया'

(चंदा और बिजली) गीत के लिए वर्ष 1970 का फिल्म फेयर पुरस्कार मिला। वो ऐसे गीतकार थे जिन्होंने शब्दों को आत्मा दी और गीतों को दर्शन, उनका जीवन और उनका साहित्य सदैव याद किया जायेगा। आज के लिये इतना ही अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी, जाते जाते उनकी शख्सियत के हवाले से उनका यह शेर देखिये ,

कहानी बन कर जिए हैं इस जमाने में
सदियां लग जाएंगी हमें भुलाने में,
आज भी होती है दुनिया पागल
जाने क्या बात है नीरज के गुनगुनाने में ।।

स्टाइल करना स्वाभाविक और मजेदार : गुलशन देवैया

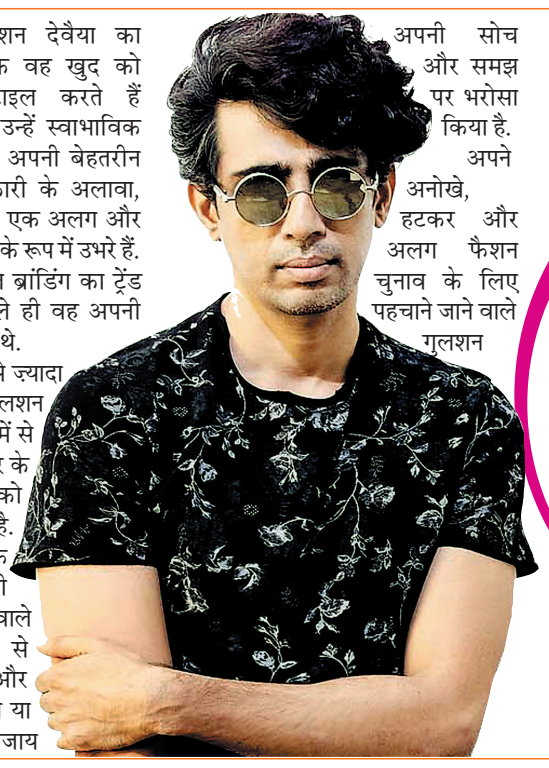

अभिनेता गुलशन देवैया का कहना है कि वह खुद को इसलिए स्टाइल करते हैं क्योंकि यह उन्हें स्वाभाविक और मज़ेदार लगता है. अपनी बेहतरीन और सराही गई अदाकारी के अलावा, गुलशन देवैया इंडस्ट्री में एक अलग और मौलिक स्टाइल आइकन के रूप में उभरे हैं. फैशन के ज़रिए पर्सनल ब्रांडिंग का ट्रेंड शुरू होने से बहुत पहले ही वह अपनी अलग पहचान बना चुके थे.

सिनेमा में 15 साल से ज़्यादा का सफर तय कर चुके गुलशन उन चुनिंदा अभिनेताओं में से हैं, जिन्होंने अपने करियर के ज़्यादातर समय खुद को खुद ही स्टाइल किया है. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी (निफ़्ट) से पढ़ाई करने वाले गुलशन फैशन जगत से गहराई से जुड़े रहे हैं और उन्होंने हमेशा ट्रेंड, लोगो या ब्रांड के दबाव के बजाय अपनी सोच और समझ पर भरोसा किया है. अपने अनोखे, हटकर और अलग फैशन चुनाव के लिए पहचाने जाने वाले गुलशन का स्टाइल बेहद निजी, सच्चा और उनकी शख्सियत को दर्शाने वाला है. वह इंडस्ट्री की उम्मीदों के हिसाब से नहीं, बल्कि अपनी पसंद के अनुसार कपड़े पहनते हैं.

जहां ज़्यादातर कलाकार हर पब्लिक अपीयरेंस के लिए स्टाइलिस्ट की टीम पर निर्भर रहते हैं, वहीं गुलशन आज भी इस बात की पूरी ज़िम्मेदारी खुद लेते हैं कि वह कैसे दिखना चाहते हैं. वह अपनी फैशन की पढ़ाई और रचनात्मक आज़ादी को खूबसूरती से साथ लेकर चलते हैं.

आज के दौर में जहां कलाकारों पर हर बार 'यादगार लुक' देने का दबाव होता है, बदलते फैशन ट्रेंड्स के साथ कदम मिलाना पड़ता है और स्टाइलिंग पर भारी खर्च करना आम बात है, वहां गुलशन अलग नज़र आते हैं.

फैशन की पढ़ाई ने उन्हें एक समझदार और गहरी सोच दी है, जहां दिखावे से ज़्यादा अभिव्यक्ति और शोर-शराबे से ज़्यादा मौलिकता को महत्व दिया जाता है. वह वायरल होने या ट्रेंड फॉलो करने के लिए कपड़े नहीं पहनते, बल्कि फैशन को अपनी पहचान जाहिर करने की भाषा मानते हैं.

तमिलनाडु में 63 करोड़ का तूफान
रॉकिंग स्टार यश की टॉक्सिक ने रचा नया ट्रेड इतिहास

रॉकिंग स्टार यश की फिल्म टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन अप्स की तमिलनाडु डिस्ट्रीब्यूशन डील 63 करोड़ एडवांस पर कमीशन बेसिस में लॉक हो चुकी है. हाल के सालों में यह इस टेरीटरी की सबसे बड़ी डील्स में से एक मानी जा रही है. फिल्म को लेकर जबरदस्त उम्मीदें पहले से ही थीं, और अब यह डील इसे राज्य की सबसे बड़ी आने वाली रिलीज में शुमार कर रहा है.

पूरे तमिलनाडु में फिल्म को दमदार मल्टी-डिस्ट्रीब्यूटर स्ट्रैटेजी के साथ रिलीज किया जाएगा, जिससे हर सर्किट में मजबूत पकड़ बनाई जा सके. चेन्नई सिटी को थिंक स्टूडियोज के स्वरूप रेड्डी संभालेंगे, जबकि चेंगलपट्टू एरिया व्हाइट नाइट्स के ट्राइडेंट रवि के जिम्मे रहेंगे. कोयंबटूर, नॉर्थ और साउथ आर्कोट, तिरुनेलवेली और कन्याकुमारी सर्किट की कमान एस पिक्चर श्रीनिवासन के हाथ में होगी. वहीं मदुरै और रामनाड, त्रिची और तंजावुर, और सलेम जैसे अहम सर्किट 5 स्टार सेंथिल मैनेज करेंगे. यह सुनियोजित टेरिटोरियल मॉडल सिंगल स्क्रीन से लेकर मल्टीप्लेक्स चेन तक हर जगह मजबूत शोकेसिंग सुनिश्चित करेगा.

डिस्ट्रीब्यूशन पार्टनर्स ने इस साझेदारी को लेकर उत्साह जताते हुए कहा कि टॉक्सिक आज के समय की सबसे बहुप्रतीक्षित भारतीय फिल्मों में से एक है और तमिलनाडु में इसे लेकर जो प्यार और उत्साह दिख रहा है, वह अद्भुत है. सालों से यहां के दर्शकों ने यश को जिस अपनत्व और जोश के साथ अपनाया है, वह बेहद खास है. इतनी बड़ी और महत्वाकांक्षी फिल्म का हिस्सा बनना हमारे लिए सिर्फ बिज़नेस डील नहीं, बल्कि एक गर्व का पल है.

ट्रेड एक्सपर्ट्स मानते हैं कि इस डील के पीछे केजीएफ चैप्टर 2 की ऐतिहासिक सफलता और तमिलनाडु में यश की जबरदस्त लोकप्रियता बड़ी वजह है. यहां के दर्शकों ने उनकी दमदार स्क्रीन प्रेजेंस और खास अंदाज़ को खुले दिल से अपनाया है. यह सीमा से परे गतिविधि आज भी थिएट्रिकल मार्केट में मजबूत तालमेल में बदल रहा है.

63 करोड़ की एडवांस डील और मजबूत टेरिटोरियल नेटवर्क के साथ टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन अप्स तमिलनाडु में ग्रैंड ओपनिंग के लिए पूरी तरह तैयार है.

फिल्म की कहानी यश और गीतू मोहनदास ने लिखी है, और डायरेक्ट भी गीतू मोहनदास ने किया है. टॉक्सिक: ए फेयरी टेल फॉर ग्रोन अप्स को कन्नड़ और इंग्लिश में साथ-साथ शूट किया गया है, जबकि हिंदी, तेलुगु, तमिल, मलयालम समेत कई भाषाओं में डब वर्जन भी रिलीज होंगे.

केवीएन प्रोडक्शंस और मॉन्स्टर माइंड क्रिएशन्स के बैनर तले बनी यह फिल्म 19 मार्च 2026 को ग्लोबल के सिनेमा में रिलीज होगी. फिल्म में नयनतारा, कियारा आडवाणी, हुमा कुरैशी, रुक्मिणी वसंत और तारा सुतारिया अहम किरदार में नजर आएंगी.

'लक्ष्मी निवास' के लिए बैंकॉक में शूट

जी टीवी का फैमिली ड्रामा 'लक्ष्मी निवास' अपने एक अहम जश्न वाले सीन के लिए बैंकॉक पहुंचा, जहां इस खास पल को असली लोकेशन पर फिल्माया गया. कहानी के एक अहम मोड़ पर, शो में भूमिका का भव्य बर्थडे सेलिब्रेशन दिखाया जाएगा, जिसका किरदार रिया मुंजाल निभा रही हैं. जो शुरुआत में एक छोटा सा सरप्राइज लगता है, वो धीरे-धीरे एक शानदार और यादगार सफर में बदल जाता है, जब राज, जिसका किरदार प्रियोम देव गुज्जर निभा रहे हैं, भूमिका को चार्टर्ड प्लेन से बैंकॉक लेकर जाता है. इस सफर का अंत एक शानदार क्रूज़ सेलिब्रेशन के साथ होता है. भारतीय टेलीविजन पर कम ही देखने को मिलने वाले इतने बड़े स्तर पर फिल्माया गया यह सीन कहानी के लिए बेहद अहम है, जिसमें प्यार, सपने और सरप्राइज़ का खूबसूरत मेल नजर आता है.

जयशंकर त्रिपाठी ने बताए अपने आध्यात्मिक अनुभव

हल्के-फुल्के और पारिवारिक मनोरंजन के अपने वादे को कायम रखते हुए एण्डटीवी ने अपनी आगामी डिवाइन ड्रैमेडी 'हे भगवान-कितना बदल गया इंसान!' की विशेष ऑन लोकेशन शूटिंग आध्यात्मिक नगरी उज्जैन में की. एक ऐसी कहानी, जो आस्था, बदलते मानवीय मूल्यों और दैवीय हस्तक्षेप को दर्शाती है, की शुरुआत के लिए महाकाल की नगरी और पवित्र महाकालेश्वर ज्योर्तिलिंग के लिए प्रसिद्ध उज्जैन से बेहतर स्थान कोई और नहीं हो सकता था. उज्जैन की पृष्ठभूमि पर आधारित यह शो आम भारतीय जीवन में पौराणिक स्पर्श को सहजता से पिरोता है. जिस शहर में कहानी घटित होती है, वहीं शूटिंग करने से महेश शर्मा (जयशंकर त्रिपाठी) की ईमानदारी, विश्वास और अप्रत्याशित दैवीय मार्गदर्शन की यात्रा को वास्तविकता और भावनात्मक गहराई मिली. महादेव की भूमिका निभा रहे तरुण खन्ना उस दैवीय शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो मानवता को देखती है और उसका मार्गदर्शन करती है.

किचन इस बार जंगल थीम में तब्दील हो गई

'लाफ्टर शेफ़्स अनलिमिटेड एंटरटेनमेंट' की किचन इस बार जंगल थीम में तब्दील हो गई, जहां कुकिंग का हंगामा हंसी से भरे सफारी में बदल गया. एप्रन की जगह जानवरों के अंदाज़ ने ली और किचन का फ्लोर जंगल में बदल गया, जहां सिर्फ एक ही नियम था- हंसो या हंसाओ ! जंगल स्पेशल एपिसोड में प्रतिभागियों ने अपने वाइल्ड अंदाज़ को अपनाया अंकिता लोखंडे बिल्ली बनकर मंच पर आई, सुधेश लेहरी जंगल सफारी गार्ड के रूप में नज़र आए, जन्नत जुबैर ने केंचुए का किरदार निभाया, कृष्णा ऊँट बने, सामर्थ घोड़े के रूप में आए, भारती तितली की तरह इधर-उधर उड़ती दिखीं, जबकि बाकी टीम भी उतने ही मज़ेदार और अनोखे अवतारों में दिखाई दी.

दर्शन रावल का नया रोमांटिक गाना 'साथिया' हुआ रिलीज

गायक दर्शन रावल का नया रोमांटिक गाना 'साथिया' हुआ रिलीज़ हो गया है. दर्शन रावल ने अपना नया रोमांटिक गाना 'साथिया' रिलीज़ कर दिया है. यह एक सोलफुल बैलेड है, जो मीठे प्यार और अपने खास इंसान को सेलिब्रेट करने की खूबसूरती को दर्शाता है.

इस गाने को दर्शन रावल ने खुद गाया है, कंपोज किया है और इसके बोल भी उन्होंने ही लिखे हैं. म्यूज़िक प्रोड्यूसर अनमोल डेनियल हैं. 'साथिया' एक सुकून भरी और दिल को छू लेने वाली धुन है, जिसे आप अपने पार्टनर के साथ एक शांत और प्यारी शाम में सुनना चाहेंगे.

दर्शन रावल ने गाने के बारे में बात करते हुए कहा, ''साथिया' वो एहसास है, जब प्यार को बड़े शब्दों की जरूरत नहीं होती. वो चुपचाप आपके साथ रहता है. यह गाना बहुत सॉफ्ट, सच्चा और मेरे दिल के बहुत करीब है.'

'साथिया' की खास बात है दर्शन की भावुक आवाज़ और सुकून भरा संगीत, जो इसके इमोशनल बोलों के साथ बहुत खूबसूरती से मेल खाता है. 14 फरवरी, वैलेंटाइन डे के मौके पर दर्शन ने वडोदरा में अपने कॉन्सर्ट के दौरान पहली बार 'साथिया' गाकर फैंस को सरप्राइज दिया था. उन्होंने बताया था कि इसी रात से इस गाने की शुरुआत हुई.

कृष्णा श्रॉफ ने शो में सुनाई अपनी लव स्टोरी

द 50 शो की कंटेस्टेंट कृष्णा श्रॉफ सुपरस्टार जैकी श्रॉफ की बेटी और टाइगर श्रॉफ की बहन हैं. इन दिनों वो द 50 के कारण सुर्खियों में हैं. हालांकि वे शो में गेम से ज्यादा अपनी लव लाइफ के कारण चर्चा में हैं. उन्होंने हाल ही में शो में खुलासा किया है कि वो अफगानिस्तान के रहने वाले अब्दुल अजीम बदख्शी के साथ रिश्ते में हैं. वो शो में प्रिंस नरूला और दूसरे कंटेस्टेंट्स के साथ अक्सर अपनी लव लाइफ की बात करती हैं.

हाल ही में उन्होंने पहली मुलाकात के बारे में शो में बताया. उन्होंने कहा कि उनका बॉयफ्रेंड अफगानिस्तान से है और वो स्रूफाइटर हैं. उन्होंनने पहली बार मुंबई में उन्हें एक फाइट के दौरान नोटिस किया था. उन्होंने कहा कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि कृष्णा और अब्दुल कभी रिलेशनशिप में आएंगे लेकिन इसके बावजूद वे कनेक्ट हो गए. इसके बाद कृष्णा उनसे गोवा में मिलीं. हम दो हफ्तों तक साथ थे. जब दो हफ्तों बाद हमने एक दूसरे को बाय बोला, तो हम रो पड़े थे. इसी समय दोनों को एहसास हुआ कि दोनों एक दूसरे के लिए कितने मायने रखते हैं.

'भूत बंगला' का पहला गाना 'हुआ रिलीज

बॉलीवुड के स्टार अक्षय कुमार की आने वाली फिल्म 'भूत बंगला' का पहला गाना 'राम जी आके भला करेंगे' रिलीज़ हो गया है.

फिल्म भूत बंगला को लेकर उत्सुकता लगातार बढ़ती जा रही है क्योंकि यह फिल्म अक्षय कुमार और फिल्ममेकर प्रियदर्शन की सुपरहिट जोड़ी को 14 साल के लंबे गैप के बाद वापस साथ ला रही है. बालाजी मोशन पिक्चर्स द्वारा प्रोड्यूस की गई इस फिल्म ने उन दर्शकों के बीच पहले से ही जबरदस्त एंटीसिपेशन पैदा कर दिया है, जो इस जोड़ी की आइकॉनिक कॉमेडी एंटरटेनर फिल्में देख कर बड़े हुए हैं. एक्साइटमेंट को और बढ़ाते हुए, मेकर्स ने फिल्म का पहला गाना 'राम जी आके भला करेंगे' रिलीज कर दिया है.यह गाना अक्षय कुमार को उनके क्लासिक अवतार में दिखाता है, जो भूतिया दुनिया और उसके कई

अजीबोगरीब भूतों के बीच बड़े आराम से नेविगेट कर रहे हैं, और स्पूक्टैकुलर केओस और कॉमिक फ्लेयर से भरी एक फ्रंटिक और मजेदार परफॉरमेंस दे रहे हैं.

प्रीतम द्वारा कंपोज किए गए और कुमार के लिखे लिरिक्स के साथ, इस गाने को अरमान मलिक और आरवन ने गाया है, जिसमें मेलो डी द्वारा लिखा और परफॉर्म किया गया एक रैप सेगमेंट इसकी लाइवली बीट्स में एक कंटेम्परेरी एज जोड़ता है. बालाजी मोशन पिक्चर्स, जो बालाजी टेलीफिल्म्स लिमिटेड का एक हिस्सा है, केप ऑफ गुड फिल्म्स के साथ मिलकर 'भूत बंगला' पेश करते हैं.